SPECIAL ISSUE
January 2020

VIDYAWARTA

हिंदी साहित्य में कृषक चेतना

हिंदी विभाग

तोष्णीवाल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

संलग्न

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड

हिंदी साहित्य में कृषक चेतना

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

प्रा.प्रमोद घन
संगोष्ठी सचिव

डॉ.[illegible]
संगोष्ठी संयोजक

डॉ.विजय [illegible]
संगोष्ठी सह संयोजक

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

संपादक

डॉ. शंकर रामभाऊ पजई

सह–संपादक

प्रा. प्रमोद किशनराव घन

डॉ. विजय गणेशराव वाघ

अतिथि संपादक

डॉ. रमेश संभाजी कुरे

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (M.S.)

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

MAH MUL03051/2012 | ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | January 2020 Special Issue-02 | 010

Index

01) 'पुस की रात' : किसानों के जीवन संघर्ष की गाथा
डॉ. पांडुरंग चिलगर, जि. लातूर ||15

02) 'गंगामैय्या' उपन्यास में कृषक चेतना
प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गाडे, बसमत ||18

03) हिंदी उपन्यास साहित्य में कृषक चेतना
सारिका गौतमराव खरात–थोरात, औरंगाबाद ||20

04) प्रेमचंद की कहानी 'सवा सेर गेहूँ में' अभिव्यक्त कृषक चेतना
प्रा.डॉ. चित्रा धामणे, जि. बीड ||23

05) गोदान उपन्यास में व्यक्त कृषक चेतना
डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे, जि. लातूर ||26

06) प्रेमचंद की कहानी 'बलिदान' में अभिव्यक्त कृषक जीवन एवं प्रासंगिकता
प्रा. सुनिल एस. कांबले, हिंगोली ||28

07) हिंदी साहित्य मे कृषक चेतना गोदान उपन्यास के संदर्भ में
प्रा. डॉ. मालती डी. शिदें, जि. हिंगोली ||31

08) राष्ट्रकवि दिनकरजी के काव्य में कृषक वर्ग की अभिव्यक्ति
डॉ. प्रीति शर्मा (भट्ट), हिंगोली ||34

09) संजीव कृत फाँस में अभिव्यक्त भारतीय कृषक की संवेदना
डॉ. मुंजाभाऊ डहाळे & डॉ. सचिन कदम, संगमनेर ||36

10) नागार्जुन के काव्य में कृषक चेतना
प्रा. पाटील कल्याण शिवाजीराव, नांदेड ||40

11) किसान का कोडा में जीवन मूल्यों का पूनर्मूल्यांकन
डॉ. सुलक्षणा जाधव–घुमरे, औरंगाबाद ||42

Principal
Shivaji College, Hingoli

http://www.printingarea.blogspot.com/
www.vidyawarta.com/03

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

दिखाकर प्रेमचंद हमें सोचने के लिए मजबूर करते हैं। हम देखते हैं कि अंतिम साँस लेते समय होरी के यह वाक्य हमें रुला देते हैं-"मेरा कहा-सुना माफ करना धनियाँ! अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गयी। अब तो यहाँ के रुपए क्रिया-करम में जायेंगे। रो मत धनिया, अब कब तक जिलायेगी? सब दुर्दशा तो हो गयी। अब मरने दे।"५ हम देखते हैं कि जीवित रहते होरी की गाय लेने की इच्छा उसके मरने के बाद गो-दान कराकर पूरी की जाती है। यह कितनी बड़ी विडम्बना है।

संदर्भ सूची

१. गोदान, प्रेमचंद, पृ.१०-११, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-१९६६

२. वही पृ.२०

३. प्रेमचंद के उपन्यास, सं.डॉ.श्रीनारायण भारद्धाज, डॉ.रमाकांत शर्मा,पृ.५८ गिरनार प्रकाशन, महेसाना (उत्तरगुजरात)संस्करण-१९८२

४. वही पृ.९४

५. गोदान, प्रेमचंद, पृ.३६४, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-१९६६

❑❑❑

06

प्रेमचंद की कहानीं 'बलिदान' में अभिव्यक्त कृषक जीवन एवं प्रासंगिकता

प्रा. सुनिल एस. कांबले

हिंदी विभाग,

शिवाजी महाविद्यालय हिंगोली

खेती में जो दिन रात काम करता है उसे 'किसान' कहते है। लोगों को खाद्य निर्माण करनेवाला किसान होता हैं पशुओं के सहारे जमीन को उपजाऊ बनाकर फसलों को उगाना, बागों में अलग—अलग प्रकारके फलों का उत्पादन करना, मुर्गीयाँ पालन, मछली पालन को अपनी कृषी व्यवस्था को बढाना इसमें आता है।

वर्तमान में किसान की जीवन कथा भयंकर गंभीर व्यथा बन गई है। आज का किसान गरीबी में. जीवन व्यतित कर रहा है। बदलते वातावरण के कारण उसकी दुर्दशा देखी नही जा रही, कठोर परिश्रम के बावजुद भी उसका जीवन अत्यंत दयनीय होता जा रहाहै। किसान की फसल बदलते वातावरण के कारण, सुखे की वजह से खराब हो रही है। उस फसल की सही किंमत उसे मिलती नही है। बहुत सारा पसिना बहाकर कडी मेहनत करके भी जो फसल बाजार ले जाता है तो उसे दलाल एवं अन्य व्यापारी नोचते हुए दिखाई देते है । उनके खाद को सही दाम प्राप्त नही होता। उस रकम से उसकी एवं उनके परिवारजनों की जरुरतो को पुरा नही कर पा रहा है। हर जगह, हर तरफ से उसे ठगाया जा रहा है । किसान अन्नदाता है, अन्न उगाना उसका काम है अगर किसान अन्न उगाना छोड दे तो सारी दुनिया भुखी मर जायेगी। खुद अन्न पैदा करता है लेकिन उसकी व्यथा कोई

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

समझ नही पा रहा है । समाज कठोर बन रहा है, संवेदनहीन लोग उसकी व्यथा समझ नही पा रहे है। खुद के वह दुखसे व्यथित है, दुखी है। सब उसकी परिक्षा लेते है। आज अलग—अलग किसान संगठन बने हुए है, उन संगठनो के बल पर सरकार के खिलाफ आंदोलन कर रहे है। अपनी फसल को यथा योग्य किंमत देने पर सरकार को आश्वस्त कर रहे है। सरकार से मिन्नते करते है। सरकार के दरबार में अपनी माँगो को पुरा करने का भरसक प्रयास करते नजर आ रहा है। पिछले अनेक वर्षो से भारत का किसान अनेक कारणों की वजह से आत्महत्या कर रहा है ।सरकार की गलत नितियाँ एवं वातावरण बदल के कारण आई हुई आपत्तियों से अनेक समस्योओं से जुझता नजर आ रहा है। जब सभी ओर से वह टूट—लूट जाता है तो उसके सामने एक ही रास्ता बचता है वह 'आत्महत्या'। आज भारत के किसान इन शेकडों समस्याओं से जुझते हुए अपना जीवन यापन कर रहे है। भयानक परिस्थितीयोंका मुकाबला करते हुए जीवन जी रहा है। जब बहुत सारी समस्या उसके उपर हावी हो जाती है तो आखीर मजबुरन उसे 'आत्महत्या' करनी पडती है। अपने देश मे ही ये हालात है की, हरदिन के समाचार पत्र एवं टी.वी चॅनलों पर दस—बीस किसान की 'आत्महत्या' की खबर मिलती है। किसान आत्महत्या के बहुत कारण है लेकिन मुख्यत: उनमें कर्ज और दुसरा प्राकृतिक विपदाओं से फसल का बर्बाद हो जाना है। किसानों के प्रति सरकार की निती एवं बाबु लोगोंद्वारा होनेवाला शोषण यह भी किसान आत्महत्या के कारण बन चुके है। आज का किसान इस व्यवस्था के हाथों मजबुर होकर वह आत्महत्या का मार्ग चुन रहा है । अमानवीयता एवं संवेदनहीनता के कारण समाज का बडा वर्ग किसान बेहाल हो चुका है। किसान नही रहेगा तो हम नही रहेंगे। अपने जीवन के लिए उन्हे बचाने की जरुरत है। किसान जिंदा रहेगा तो हम खुशहाल रहेंगे।

भारत में हिन्दी कहानिकारों ने किसानों का यथार्थ चित्रन करने का प्रयास किया है। लेकिन उसमें प्रेमचंदजी का नाम सर्वोपरी है। प्रेमचंदजी ने अपनी कहानियों में समाज एवं सामाजिक समस्याओं का जीवन्त चित्रण करने का प्रयास किया है। उन्होने जो भी कहानीयॉ लिखी है। उसमे. सजीवता एवं गंभीरता का दर्शन होता है। प्रेमचंद की रचनाओं भारत के दर्शन होते है। भारत के किसान आंदोलन के दौर में उन्होने किसान वर्ग का यथार्थ परक चित्रण अपनी कहानियों मे बखुबी के साथ किया है। प्रेमचंद की कृषक जीवन को अभिव्यक्त करने वाली कहानियों में 'बलिदान' 'जेल', 'पंचपरमेश्वर', 'सवा सेर गेहुँ', 'दो बैलो की कथा', 'नशा', 'उपदेश', 'घासवाली', 'विध्वंस', 'पुस की रात', 'मुक्तिमार्ग', हलकु आदी कहानियॉ भारतीय किसान वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाली कहानियॉ है। 'बलिदान' इस कहानी में किसान जीवन पर प्रकाश डाला है। किसान जीवन में कितना कडा संघर्ष करता है, कितनी परेशानियों से जुझता है इसका सही प्रमाण 'बलिदान' कहानी में मिलता है।

"घर में गहने भी नही है। नहीं, उन्ही को बेचता। ले. दे कर उक हँसली बनवायी थी वह भी बनिये के घर पडी हुई है। साल भर हो गया, छुडाने की नौबत न आयी।"[१]

गिरधारी और उसकी पत्नी सुभागी दोनों चिंता में पड गये है, कोई उपाय सुझता ही नही। दोनों को रातभर नींद नहीं आती, उन्हे अपने जमीन की फिक्र लगी है, कही साहुकार के मुँह में न चली जाय। साहुकार ओंकारनाथ की नजर गिरधारी की जमीन पर लगी है। गिरधारी के पिता हरखु के दवाईयों और क्रिया कर्म करने के लिए कुछ रुपयों के लिए तंग करता है। "जब गिरधारी क्रिया कर्म से निवृत्त हो गया और चैत का महिना समाप्त होने आया, तब जमीनदार साहिब ने गिरधारी को बुलाया और उससे पुछा खेतों के बारें मे क्या कहते हो ? गिरधारी ने रोकर कहा उन्ही खेतों का ही आसरा, जोतुँगा नही तो क्या करुंगा।"[२]

गिरधारी के पिता हरखु ने जमीन को बडी मेहनत करके कमाया है। उसे जमीन को फसल योग्य बनाया है, उपजाऊ बनाया है, बच्चे जैसा संभाला है। आज उसकी अवस्था भयंकर हो चुकी है। जमीनपर साहुकार की नजर है उसपर कब्जा पाने के लिए जी—तोड करतब कर रहा है। आज के किसानों का भी यही हाल है। आज हर किसान प्राकृतिक आपदाओं

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

से एवं साहुकारो के लालसा से आहत होता दिखाई देता है। गिरधारी ने जो 'बलिदान' दिया है, आज उससे कही जादा भारत के किसान 'बलिदान' देते नजर आ रहे है। आज की प्रशासन व्यवस्था और गंदी राजनीती के कारण देश में हर दिन दस—बीस किसानो की आत्महत्या हो रही है।

'बलिदान' कहानी का नायक गिरीधारी गंभीर सोच में डुबा है। "अब मेरा क्या हाल होगा ? अब यह जीवन कैसे कटेगा ? ये लडके किसके द्वार पर जायेंगे ? मजदुरी का विचार करते ही उसका हृदय व्याकुल हो जाता है। इतने दिनों तक स्वाधीनता और सम्मान का सुख भोगने के बाद अधमचाकरी की शरण लेने के बदले वह मर जाना अच्छा समझता है।"३

किसान जीवन की वास्तविक, गहरी और प्रामाणिक संवेदना प्रेमचंदजी ने अपने कलम द्वारा चित्रित की है। किसान जीवन की त्रासदी को उन्होने खुद तील—तील कर महसुस किया है। 'बलिदान' यह कहानी ग्रामीण किसान के जीवन को सच्चे अर्थ में सामने लाती है। गॉव के किसानो के जीवन प्रेमचंद काल से लेकर आजाद भारत में आज की तिथि में भी जीवन बदतर दिखाई देता है। आज के साहुकार, पूँजीपति, राजनैतिक नेता और प्रशासकीय अधिकारीयों की नजर किसान के जमीन पर गिध्द नजर लगी हुई है। आज हमारे देश में भ्रष्ट व्यवस्था ने किसानों का जीवन नरक जैसा कर दिया है। जिते जी नरक यातनाएँ झेलता हुआ किसान मजबुर है बदलते प्राकृतिक आपदाओं से और उपर से भ्रष्ट सरकार से सरकारी लापरवाही और असंवेदनशीलता से किसान तंग आकर 'बलिदान' दे रहे है।

'बलिदान' कहानी का गिरधारी भी आत्महत्या करता है। "अरे गिरधारी ! मरदे आदमी, तुम यहाँ खडे हो, और बेचारी सुभागी हैरान हो रही है। कहाँ से आ रहे हो ? यह कहते हुए बैलों को छोडकर गिरधारी की और चले, गिरधारी पिछे हटने लगा और पिछे वाले कुएँ मे कुद पडा।"४

प्रेमचंद जी के समय में भ्रष्ट व्यवस्था जालीम हो चली थी तत्कालीन समाजव्यवस्था सरल, सहज जीवन जीनेवाले किसानों का भयानक शोषण होता था। 'बलिदान' कहानी का नायक इस व्यवस्था का दर्दनाक शिकारी होता है। समय और समाज के अनुसार साहित्य के मुल्य भी बदले है। आज के साहित्यकार भी सच्चाई को प्रकट करने का भरसक प्रयास करते है। आज भ्रष्ट व्यवस्था, सरकार की असंवेदनशीलता और प्राकृतिक आपदाओं से किसान त्रस्त है। किसानो के जीवन में बहुत सारी समस्याएँ आ रही है। जीवन की सारी आशाएँ, इच्छाएँ, अपेक्षाएँ खेतों पर निर्भर होती है। जब तक फसल घर में आकर नही पडती तब तक उसे निंद नहीं आती। ग्रामीण जीवन की त्रासदी, उसकी तिव्रता आज गंभीर रुप धारण कर रही है। 'बलिदान' कहानी की नायिका सुभागी अपनी जमीन, अपने अधिकार के लिए लडती है। लेकिन उसके हाथ खाली ही रहते है। पति का 'बलिदान' उसे गॉव छोडने के लिए मजबुर करता है। आज हमारा देश किसान आत्महत्या का देश बन चुका है। आजादी के बाद हजारों किसानों ने इस व्यवस्था से तंग आकर 'बलिदान' दिया है। स्वाभिमानी किसान जब हतबल (मजबुर) होता है तो इस व्यवस्था से तकलीब, मानसिक यातना और त्रासदी से छुटकारा पाने के लिए आत्महत्या कर मुक्त होना पसंद कर रहा है। बदलना प्राकृतिक वातावरण भी किसान के आत्महत्या करने के लिए मजबुर कर रहा है। किसान को सरकारी मदत मिलनी चाहिए। सरकार की उदासिनता (किसानों के प्रति) कम होनी चाहिए। किसान के साथ छल—बल न कर उसे अपने हक से वंचित नही रखना चाहिए। किसान की आत्मा उसके खेतों में रहती है। उसके जमीन को बचाने की कोशिश होनी चाहिए। किसान को मजदुर बनाने की जो कोशिश हो रही है वह बन्द होनी चाहिए। उसे अपने पैरों के बलपर खडा होने की शक्ति प्रदान करना यह आज के व्यवस्था का फर्ज हे।

संदर्भ :

१) प्रेमचंद मानसरोवर (भाग—८), 'बलिदान', पृष्ठ क. ४५.

२) वही...., पृष्ठ क्र. ४४.

३) वही...., पृष्ठ क्र. ४६

४) वही...., पृष्ठ क्र. ४८

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)